खण्ड-460, अंक-1
सोमवार, 30 श्रवण, शक संवत् 1928
(21 अगस्त, 2006 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, द्वितीय सत्र 2006)

खण्ड 460 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

2006

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
चौदहवीं विधान सभा के सदस्यों की सूची महामहिम श्री राज्यपाल, मंत्री-परिषद्, नेता विरोधी दल, उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल की सूची	क-ड
उपस्थित सदस्य	ण-ध
राष्ट्रीय-गीत	1
वर्तमान विधान सभा के सदस्य हाजी मुश्ताक सोलंकी तथा श्री राम स्वरूप सिंह के निधन पर शोकोद्गार	1-8
"भारत रत्न" प्रसिद्ध शहनाई वादक, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के निधन पर शोकोद्गार	8-15

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

चौदहवीं विधान सभा के सदस्यों की सूची

1-अकीलुर्रहमान खां, श्री — मुरादाबाद
2-अक्षयवर लाल, श्री — बहराइच
3-अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
4-अजय कपूर, श्री — कानपुर नगर
5-अजय कुमार, डा0 — बागपत
6-अजय राय, श्री — वाराणसी
7-अजीम भाई, श्री — फिरोजाबाद
8-अताउल रहमान, श्री — बरेली
9-अनवर महमूद, श्री — बलरामपुर
10-अनार सिंह दिवाकर, श्री — एटा
11-अनिल कुमार, श्री — बुलन्दशहर
12-अनिल कुमार पाण्डेय, श्री — सुल्तानपुर
13-अनिल कुमार मौर्य, श्री — मिर्जापुर
14-अनिल कुमार वर्मा, श्री — सीतापुर
15-अनिल कुमार वर्मा, श्री — हरदोई
16-अनिल कुमार सिंह यादव, श्री — एटा
17-अनिल सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
18-अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री — पीलीभीत
19-अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री — देवरिया
20-अनूप कुमार पाण्डेय, श्री — बस्ती
21-अनवार अहमद, श्री — इलाहाबाद
22-अब्दुल कलाम, श्री — सन्त कबीर नगर
23-अब्दुल मन्नान, श्री — हरदोई
24-अब्बास अली जैदी उर्फ रुश्दी मियां, श्री — बाराबंकी
25-अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री — फतेहपुर
26-अमरमणि, श्री — महराजगंज
27-अमर सिंह परमार, श्री — आगरा
28-अमर सिंह यादव पुत्र श्री सुन्दर सिंह, श्री — हाथरस
29-अमीता सिंह, श्रीमती — सुल्तानपुर
30-अम्बिका चौधरी, श्री — बलिया
31-अम्बेश कुमारी, श्रीमती — महोबा
32-अयोध्या प्रसाद पाल, श्री — फतेहपुर
33-अरविन्द गिरि, श्री — खीरी
34-अरविन्द कुमार सिंह उर्फ गोप, श्री — बाराबंकी
35-अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा0 — जालौन
36-अरुण कुमारी, श्रीमती — कानपुर देहात
37-अरुणवीर सिंह, श्री — बहराइच
38-अरुणा तोमर, श्रीमती — कानपुर नगर
39-अलका राय, श्रीमती — गाजीपुर
40-अलगू प्रसाद चौहान, श्री — सन्त कबीर नगर
41-अवधेश कुमार वर्मा, श्री — शाहजहांपुर
42-अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
43-अशोक कुमार कटियार, श्री — कानपुर देहात
44-अशोक बाजपेयी, डा0 — हरदोई
45-अशोक सिंह चौहान, श्री — मैनपुरी
46-आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री — सिद्धार्थनगर
47-आनन्द प्रकाश लोधी, श्री — फतेहपुर
48-आर0एस0 कुशवाहा, श्री — खीरी
49-आर0 के0 चौधरी, श्री — लखनऊ
50-आर0 के0 सिंह पटेल, श्री — चित्रकूट
51-आलम बदी, श्री — आजमगढ़
52-आलोक कुमार शाक्य, श्री — मैनपुरी
53-आशा किशोर, श्रीमती — रायबरेली
54-आशीष यादव, श्री — बदायूं
55-आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री — बदायूं
56-इकबाल महमूद, श्री — मुरादाबाद
57-इन्द्रजीत सरोज, श्री — कौशाम्बी
58-इन्द्रदेव सिंह, डा0 — बिजनौर

59-उज्ज्वल रमण सिंह, श्री — इलाहाबाद
60-उदयभान करवरिया, श्री — इलाहाबाद
61-उदयराज यादव, श्री — उन्नाव
62-उमा किरन, श्रीमती — मुजफ्फरनगर
63-उमा शंकर कुशवाहा, श्री — गाजीपुर
64-ओइमवेश, स्वामी — बिजनौर
65-ओमकार सिंह यादव, श्री — बदायूं
66-ओम प्रकाश, श्री — गाजीपुर
67-ओम प्रकाश, श्री — सीतापुर
68-ओम प्रकाश (ओ0पी0 सिंह), श्री — सुल्तानपुर
69-ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री — सुल्तानपुर
70-ओम प्रकाश सिंह, श्री — मिर्जापुर
71-कपिल देव यादव, श्री — मऊ
72-कमलेश कुमार, श्री — गोरखपुर
73-कमलेश कुमार पाठक, श्री — कानपुर देहात
74-कमाल यूसुफ मलिक, श्री — सिद्धार्थनगर
75-काजिम अली खां उर्फ नवेद मियां, नवाब — रामपुर
76-कामेश्वर उपाध्याय, श्री — देवरिया
77-कालीचरन राजभर, श्री — गाजीपुर
78-काशीराम, श्री — रामपुर
79-किरण पाल कश्यप, श्री — मुजफ्फरनगर
80-किरन पाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
81-किशन लाल बघेल, सेठ — आगरा
82-कुतुबुद्दीन अन्सारी, श्री — बिजनौर
83-कुलदीप सिंह सेंगर, श्री — उन्नाव
84-कृष्ण कुमार उर्फ सतीश वर्मा, श्री — हरदोई
85-कृष्णा पासवान, श्रीमती — फतेहपुर
86-केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री — इलाहाबाद
87-कैलाश, श्री — गाजीपुर
88-कैलाश चौरसिया, श्री — मिर्जापुर
89-कोविद कुमार, श्री — शाहजहांपुर
90-कौकब हमीद खां, श्री — बागपत
91-कौशल किशोर, श्री — खीरी
92-कौशल किशोर, श्री — लखनऊ
93-खालिद अज़ीम उर्फ अशरफ, श्री — इलाहाबाद
94-गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री — आगरा
95-गंगा बक्श सिंह, डा0 — उन्नाव
96-गंगा भक्त सिंह, श्री — हरदोई
97-गया चरन दिनकर, श्री — बांदा
98-गीता सिंह, श्रीमती — बलरामपुर
99-गुलाब देवी, श्रीमती — मुरादाबाद
100-घूरा राम, श्री — बलिया
101-चन्द्र किशोर, श्री — महराजगंज
102-चन्द्रदेव राम यादव, श्री — आजमगढ़
103-चन्द्रभद्र सिंह, श्री — सुल्तानपुर
104-चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री — श्रावस्ती
105-चितरंजन स्वरूप, श्री — मुजफ्फरनगर
106-छेदी राम, श्री — गाजीपुर
107-छोटे लाल यादव, श्री — बाराबंकी
108-छोटे लाल वर्मा, श्री — आगरा
109-जंग बहादुर सिंह, श्री — सुल्तानपुर
110-जगदम्बिका पाल, श्री — बस्ती
111-जगदीश नारायण (राय), श्री — जौनपुर
112-जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री — कुशीनगर
113-जगदीश सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
114-जगदीश सोनकर,श्री — जौनपुर
115-जगन प्रसाद गर्ग, श्री — आगरा
116-जगराम सिंह, श्री — मुरादाबाद
117-जटाशंकर सिंह, श्री — बहराइच
118-जमालुद्दीन रिज़वी, श्री — फर्रुखाबाद
119-जय प्रकाश यादव, श्री — गोरखपुर
120-जय प्रताप सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
121-जयराम विमल, श्री — अम्बेडकरनगर
122-जयवीर सिंह, ठाकुर — अलीगढ़
123-जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया,श्री — गोरखपुर

124-जियाउद्दीन रिजवी, श्री — बलिया
125-ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री — महराजगंज
126-तेजपाल सिंह, श्री — मथुरा
127-दद्दू प्रसाद, श्री — चित्रकूट
128-दयाराम, श्री — कौशाम्बी
129-दया शंकर वर्मा, श्री — जालौन
130-दिनेश सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
131-दिलीप कुमार वर्मा, श्री — बहराइच
132-दीनानाथ कुशवाहा, श्री — देवरिया
133-दीनानाथ भाष्कर, श्री — सन्त रविदास नगर, भदोही
134-दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री — देवरिया
135-दुर्गा प्रसाद यादव, श्री — आजमगढ़
136-देवकी नन्दन, श्री — हाथरस
137-देव नारायण उर्फ जी0 एम0 सिंह, श्री — गोरखपुर
138-देवेन्द्र नागपाल, श्री — ज्योतिबाफूले नगर
139-देवेन्द्र प्रताप, श्री — एटा
140-देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री — रायबरेली
141-द्वारिका प्रसाद, श्री — सन्त कबीर नगर
142-धनंजय सिंह, श्री — जौनपुर
143-धर्मपाल सिंह, श्री — बरेली
144-धर्मराज निषाद, श्री — अम्बेडकरनगर
145-धर्म सिंह सैनी, डा0 — सहारनपुर
146-धर्मेन्द्र कुमार कश्यप, श्री — बरेली
147-धू राम लोधी, चौधरी — हमीरपुर
148-नत्थू सिंह, श्री — उन्नाव
149-नन्दिता शुक्ला, श्रीमती — गोण्डा
150-नरेन्द्र कुमार, श्री — गौतमबुद्ध नगर
151-नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा0 — इलाहाबाद
152-नरेन्द्र सिंह वर्मा, श्री — सीतापुर
153-नरेन्द्र सिंह यादव, श्री — फर्रुखाबाद
154-नरेन्द्र शिशौदिया, श्री — गाजियाबाद
155-नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री — हरदोई
156-नवाब सिंह नागर, श्री — गौतमबुद्ध नगर
157-नारद राय, श्री — बलिया
158-परमजीत, श्री — मुजफ्फरनगर
159-परमेश्वर दयाल, श्री — सोनभद्र
160-पी0 के0 राय, डा0 — कुशीनगर
161-पीटर फैन्थम, श्री — नाम-निर्देशित
162-पीतम राम, श्री — पीलीभीत
163-पूरन सिंह बुन्देला, श्री — ललितपुर
164-पूर्णमासी देहाती, श्री — कुशीनगर
165-प्रताप चौधरी, श्री — हाथरस
166-प्रदीप जैन "आदित्य", श्री — झांसी
167-प्रदीप माथुर, श्री — मथुरा
168-प्रभु दयाल, श्री — मेरठ
169-प्रभु नारायण, श्री — चन्दौली
170-प्रमोद कुमार, श्री — प्रतापगढ़
171-प्रमोद गौड़, श्री — अलीगढ़
172-प्रागी लाल अहिरवार, श्री — झांसी
173-प्रेम पाल सिंह यादव, श्री — बदायूं
174-प्रेमलता कटियार, श्रीमती — कानपुर नगर
175-प्रेमलता देवी, श्रीमती — अलीगढ़
176-प्रेम सिंह, श्री — मथुरा
177-फतेह बहादुर, श्री — महराजगंज
178-फसीहा बशीर, चौधरी (गजाला), श्रीमती — देवरिया
179-फागू, श्री — मऊ
180-बंशीधर राज, श्री — खीरी
181-बलराम यादव, श्री — आजमगढ़
182-बादशाह सिंह, श्री — हमीरपुर
183-बाबूराम, एम0काम, श्री — जालौन
184-बाबू लाल, श्री — गोण्डा
185-बाबू लाल, चौधरी — आगरा
186-बाबू लाल कुशवाहा, श्री — बांदा
187-बिजय सिंह, श्री — फर्रुखाबाद

188-बीजू पटनायक, श्री — गाजीपुर
189-बीना भारद्वाज, श्रीमती — रामपुर
190-बृजेन्द्र कुमार व्यास (डमडम महराज), श्री — झांसी
191-बृजेन्द्र प्रताप सिंह कुंवर, एडवोकेट — जालौन
192-बैजनाथ पासवान, श्री — मऊ
193-बैजनाथ दुबे, श्री — गोण्डा
194-ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, श्री — देवरिया
195-भगवत शरन गंगवार, श्री — बरेली
196-भगेलू राम, श्री — सुल्तानपुर
197-भरत सिंह, श्री — बलिया
198-भारतेन्द्र सिंह, कुंवर — बिजनौर
199-भूपेन्द्र सिंह, श्री — बदायूं
200-मतेश चन्द्र सोनकर, श्री — कौशाम्बी
201-मदन गोपाल वर्मा, श्री — फतेहपुर
202-मदन चौहान, श्री — गाजियाबाद
203-मदन भैया, श्री — बागपत
204-मदन सिंह उर्फ सन्तोष कुमार, श्री — इटावा
205-मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री — रायबरेली
206-मलिक मसूद, श्री — आजमगढ़
207-मशहूद खां, श्री — बलरामपुर
208-मस्तराम चौ0, एडवोकेट — उन्नाव
209-महबूब अली, श्री — ज्योतिबाफूले नगर
210-महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा — आगरा
211-महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीन बाबू, श्री — सीतापुर
212-महेन्द्र सिंह, चौधरी — अलीगढ़
213-महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
214-महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री — इटावा
215-महेश त्रिवेदी, श्री — कानपुर देहात
216-महेश नारायण सिंह, श्री — इलाहाबाद
217-माता प्रसाद पाण्डेय, श्री — सिद्धार्थनगर
218-मान पाल सिंह, श्री — एटा
219-माया प्रसाद, श्रीमती — खीरी
220-मिथिलेश कुमार, श्री — शाहजहांपुर
221-मुकुट बिहारी वर्मा, श्री — बहराइच
222-मुकुल उपाध्याय, श्री — अलीगढ़
223-मुलायम सिंह यादव, श्री — बदायूं
224-मुंशीलाल गौतम, श्री — बुलन्दशहर
225-मूलचन्द्र चौहान, ठाकुर — बिजनौर
226-मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
227-मोहन देव शंखवार, श्री — फिरोजाबाद
228-मोहम्मद आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री — मुरादाबाद
229-मोहम्मद आजम खां, श्री — रामपुर
230-मोहम्मद इरशाद खां, श्री — लखनऊ
231-मोहम्मद बशीर, चौधरी — आगरा
232-मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री — इलाहाबाद
233-मोहम्मद रिजवान, श्री — मुरादाबाद
234-मोहम्मद शफीर, श्री — फतेहपुर
235-यशपाल चौधरी, श्री — खीरी
236-यशवन्त सिंह, डा0 — मुजफ्फरनगर
237-याकूब, हाजी — मेरठ
238-योगेन्द्र कुमार, श्री — बदायूं
239-योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री — गोण्डा
240-रंगनाथ मिश्र, श्री — संत रविदास नगर, भदोही
241-रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया, श्री — प्रतापगढ़
242-रणवीर राणा, श्री — मेरठ
243-रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर — कुशीनगर
244-रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री — कुशीनगर
245-रमेश चन्द्र बिन्द, डा0 — मिर्जापुर
246-रवीन्द्र पुण्डीर, प्रो0 — मेरठ
247-राकेश कुमार वर्मा, श्री — बाराबंकी

248-राकेश पाण्डेय, श्री अम्बेडकर नगर
249-राकेश सचान, श्री कानपुर देहात
250-राज किशोर सिंह, श्री बस्ती
251-राजनाथ यादव, श्री वाराणसी
252-राजपाल त्यागी, श्री गाजियाबाद
253-राजपाल सिंह बालियान, श्री मुजफ्फरनगर
254-राजपाल सिंह सैनी, श्री मुजफ्फरनगर
255-राजरानी रावत, श्रीमती बाराबंकी
256-राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती बाराबंकी
257-राजवीर सिंह, श्री बुलन्दशहर
258-राजा राम, श्री प्रतापगढ़
259-राजीव कुमार सिंह, श्री बाराबंकी
260-राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री प्रतापगढ़
261-राजेन्द्र प्रसाद यादव, श्री लखनऊ
262-राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री एटा
263-राजेन्द्र सिंह राणा, श्री सहारनपुर
264-राजेश अग्रवाल, श्री बरेली
265-राजेश कुमार, श्री खीरी
266-राधा मोहन दास अग्रवाल, डा0 गोरखपुर
267-राधेश्याम जायसवाल, श्री सीतापुर
268-राधेश्याम सिंह, श्री कुशीनगर
269-राबिया कलाम, श्रीमती वाराणसी
270-राम अचल राजभर, श्री अम्बेडकर नगर
271-राम इकबाल सिंह, श्री बलिया
272-राम करन आर्य, श्री बस्ती
273-राम किशुन, श्री चन्दौली
274-राम कृपाल, श्री इलाहाबाद
275-राम गोविन्द चौधरी, श्री बलिया
276-राम चन्द्र यादव, श्री फैजाबाद
277-राम नरेश यादव, श्री आजमगढ़
278-रामनाथ, श्री प्रतापगढ़
279-रामपाल यादव, श्री सीतापुर
280-राम पाल वर्मा, श्री हरदोई
281-राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री कन्नौज
282-राम प्रताप सिंह, श्री गोण्डा
283-राम प्रसाद चौधरी, श्री बस्ती
284-रामबाबू हरित, डा0 आगरा
285-राम बिशुन आजाद, श्री गोण्डा
286-राम भुआल निषाद, श्री गोरखपुर
287-राम मगन, श्री बाराबंकी
288-राम लाल अकेला, श्री रायबरेली
289-रामवीर उपाध्याय, श्री हाथरस
290-रामवीर सिंह, श्री फिरोजाबाद
291-राम शंकर पाल, श्री उन्नाव
292-राम सेवक, श्री सुल्तानपुर
293-राम स्वरूप सिंह, श्री कानपुर देहात
294-रामहेत भारती, श्री सीतापुर
295-रामेश्वर सिंह यादव, श्री एटा
296-रिजवान अहमद खां, श्री ज्योतिबाफूले नगर
297-रियाज अहमद, श्री पीलीभीत
298-लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा0 मेरठ
299-लल्लू सिंह, श्री फैजाबाद
300-लालजी टण्डन, श्री लखनऊ
301-लालजी वर्मा, श्री अम्बेडकर नगर
302-लाल बहादुर यादव, श्री जौनपुर
303-लुईस खुर्शीद, श्रीमती फर्रुखाबाद
304-वकार अहमद शाह, डा0 बहराइच
305-वसीम अहमद, श्री आजमगढ़
306-विजमा यादव, श्रीमती इलाहाबाद
307-विजय कुमार मिश्रा, श्री सन्त रविदास नगर, भदोही
308-विजय बहादुर पाल, श्री कन्नौज
309-विजय सिंह, श्री सोनभद्र
310-विद्या चौधरी, श्रीमती आजमगढ़
311-विद्या सागर गुप्ता, श्री लखनऊ
312-विनय शाक्य, श्री औरैया
313-विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री गोण्डा
314-विनोद कुमार यादव उर्फ कक्का, श्री इटावा

315-विनोद कुमार सिंह, श्री — जौनपुर
316-विनोद तिवारी, डा0 — पीलीभीत
317-विमल कृष्ण अग्रवाल, श्री — बदायूं
318-विमला राकेश, श्रीमती — सहारनपुर
319-विवेक बंसल, श्री — अलीगढ़
320-विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री — बांदा
321-विश्राम सिंह यादव, श्री — हरदोई
322-वीरेन्द्र प्रताप सिंह "मुन्ना", श्री — शाहजहांपुर
323-वीरेन्द्र सिंह गंगवार, श्री — बरेली
324-वीरेन्द्र सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
325-वीरेन्द्र सिंह,श्री — वाराणसी
326-वीरेन्द्र सिंह बुन्देला "भगत राजा", श्री — ललितपुर
327-वीरेश्वर, श्री — अलीगढ़
328-वेदराम भाटी, श्री — बुलन्दशहर
329-शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री — सन्त रविदासनगर भदोही
330-शब्बीर, श्री — बहराइच
331-शमीमुल हक, श्री — मुरादाबाद
332-शरदवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
333-शहजिल इस्लाम, श्री — बरेली
334-शाकिर अली, श्री — देवरिया
335-शारदा देवी, श्रीमती — गोरखपुर
336-शारदा नन्द अंचल, श्री — बलिया
337-शारदा प्रसाद, श्री — चन्दौली
338-शाहिद मंजूर, श्री — मेरठ
339-शिव कुमार बेरिया, श्री — कानपुर देहात
340-शिव चरन प्रजापति, श्री — हमीरपुर
341-शिव तपस्या पासवान, श्री — चन्दौली
342-शिव पाल सिंह यादव, श्री — इटावा
343-शिव प्रताप यादव, डा0 — बलरामपुर
344-शिवाकान्त ओझा, प्रोफेसर — प्रतापगढ़
345-शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री — महराजगंज
346-शिशुपाल सिंह यादव, श्री — एटा
347-शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री — जौनपुर
348-श्याम सिंह अहेरिया, श्री — मथुरा
349-श्यामदेव राय चौधरी, श्री — वाराणसी
350-श्याम नारायन, श्री — महराजगंज
351-श्याम प्रकाश, श्री — हरदोई
352-श्याम लाल रावत, श्री — सीतापुर
353-श्याम सुन्दर शर्मा, श्री — मथुरा
354-श्याम सूरत उपाध्याय, श्री — इलाहाबाद
355-श्रद्धा यादव, श्रीमती — जौनपुर
356-श्रीराम भारती, श्री — मिर्जापुर
357-संजय गर्ग, श्री — सहारनपुर
358-संजीव दरियाबादी, श्री — कानपुर नगर
359-संदीप अग्रवाल, श्री — मुरादाबाद
360-सतीश महाना, श्री — कानपुर नगर
361-सत्तो देवी, श्रीमती — सहारनपुर
362-सत्य प्रकाश अग्रवाल (कैलाश डेरी वाले), श्री — मेरठ
363-सदल प्रसाद, श्री — गोरखपुर
364-सन्ध्या कठेरिया, कु0 — मैनपुरी
365-समरपाल सिंह, श्री — बागपत
366-सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुं0 — मुरादाबाद
367-सलिल विश्नोई, श्री — कानपुर नगर
368-सिद्ध गोपाल साहू, श्री — महोबा
369-सियाराम सागर, डा0 — बरेली
370-सीताराम निषाद, श्री — फैजाबाद
371-सुखदेव राजभर, श्री — आजमगढ़
372-सुखदेवी वर्मा, श्रीमती — इटावा
373-सुन्दर सिंह, श्री — बुलन्दशहर
374-सुरेन्द्र कुमार मुन्नी, श्री — गाजियाबाद
375-सुरेन्द्र पाल वर्मा, डा0 — बांदा
376-सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री — जौनपुर
377-सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री — वाराणसी

378-सुरेश कुमार खन्ना, श्री	शाहजहांपुर	391-हीरा लाल गौतम, श्री	आजमगढ़
379-सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री	लखनऊ	392-हुकुम सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
380-सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री	लखनऊ	393-होशियार सिंह, श्री	बुलन्दशहर
381-सुल्तान बेग, श्री	बरेली	*394-रिक्त	कानपुर नगर
382-सुशील चौधरी, डा0	सहारनपुर	**395-रिक्त	रायबरेली
383-सूरज सिंह शाक्य, श्री	एटा	**396-रिक्त	मैनपुरी
384-सोमारू राम सरोज, श्री	जौनपुर	**397-रिक्त	सीतापुर
385-सोवरन सिंह, श्री	मैनपुरी	**398-रिक्त	गाजियाबाद
386-स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री	रायबरेली	***399-रिक्त	औरैया
387-हरि ओम यादव, श्री	फिरोजाबाद	***400-रिक्त	बिजनौर
388-हरि प्रताप सिंह, श्री	प्रतापगढ़	****401-रिक्त	बिजनौर
389-हरि शंकर तिवारी, श्री	गोरखपुर	****402-रिक्त	उन्नाव
390-हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव		****403-रिक्त	कन्नौज
"हरीश जी", श्री	वाराणसी	****404-रिक्त	झांसी

*दिनांक 2 जून, 2006 को श्री हाजी मुश्ताक सोलंकी (कानपुर नगर) की मृत्यु के फलस्वरूप।

**माननीय अध्यक्ष, विधान सभा द्वारा "भारत का संविधान" की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1) के अन्तर्गत विधान सभा की सदस्यता से दिनांक 10 जून, 2006 को निरर्ह घोषित किये जाने के फलस्वरूप।

***दिनांक 15 अगस्त, 2006 को श्री राम स्वरूप सिंह (बिजनौर) की मृत्यु के फलस्वरूप।

**** माननीय अध्यक्ष, विधान सभा द्वारा "भारत का संविधान" की दसवीं अनुसूची के पैरा 2 (1) (ए) के अन्तर्गत विधान सभा की सदस्यता से दिनांक 19 अगस्त, 2006 को निरर्ह घोषित किये जाने के फलस्वरूप।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

महामहिम राज्यपाल

श्री टी0 वी0 राजेस्वर

मंत्रि-परिषद्

मंत्री

क्रमांक	नाम	कार्य विभाग (पोर्टफोलियो)
1	2	3
1	श्री मुलायम सिंह यादव	सामान्य प्रशासन, सचिवालय प्रशासन, गृह, गोपन, सतर्कता, नियुक्ति, कार्मिक, सूचना, निर्वाचन, वित्त, कर एवं निबन्धन (व्यापार कर), न्याय, विधायी, नियोजन, प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन, राज्य सम्पत्ति, आबकारी (मद्य निषेध को छोड़कर), माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा (आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सा शिक्षा को छोड़कर), स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, आवास एवं शहरी नियोजन, गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग तथा उत्तर प्रदेश पुनर्गठन समन्वय, सार्वजनिक उद्यम
2	श्री मोहम्मद आजम खां	संसदीय कार्य, नगर विकास
3	श्री शिवपाल सिंह यादव	लोक निर्माण, भूतत्व एवं खनिकर्म, कृषि, विदेश व्यापार, कृषि विपणन एवं कृषि निर्यात, ऊर्जा
4	श्री कोकब हमीद	पर्यटन
5	श्री अहमद हसन	परिवार कल्याण
6	श्री बलराम यादव	पंचायती राज
7	श्री अवधेश प्रसाद	समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण
8	श्री नरेश अग्रवाल	परिवहन
9	डा0 अशोक बाजपेयी	कृषि (कृषि विपणन एवं कृषि निर्यात को छोड़कर) एवं धर्मार्थ कार्य
10	श्री किरन पाल सिंह	बेसिक शिक्षा
11	श्री अम्बिका चौधरी	राजस्व
12	श्री हरि शंकर तिवारी	स्टाम्प तथा न्यायालय शुल्क, नागरिक सुरक्षा
13	श्री राम गोविन्द चौधरी	बाल विकास एवं पुष्टाहार
14	श्री शाकिर अली	लघु सिंचाई, मुस्लिम वक्फ
15	श्री विश्वम्भर प्रसाद निषाद	वास्य सहायतित परियोजना, अम्बेडकर ग्राम विकास, समग्र ग्राम विकास
16	श्री आर0 के0 चौधरी	खेलकूद, युवा कल्याण
17	श्री राजाराम पाण्डेय	खादी एवं ग्रामोद्योग
18	श्री ओम प्रकाश सिंह	भूमि विकास एवं जल संसाधन, परती भूमि विकास

क्रमांक	नाम	कार्य विभाग (पोर्टफोलियो)
1	2	3
19	श्री वीरेन्द्र सिंह	पशुधन
20	श्री राज किशोर सिंह	उद्यान
21	श्री जगदीश सिंह राना	लघु उद्योग, वस्त्रोद्योग, रेशम उद्योग
22	श्री ब्रह्माशंकर त्रिपाठी	होमगार्ड्स, प्रान्तीय रक्षा दल
23	श्री राकेश कुमार वर्मा	कारागार
24	डा0 वकार अहमद शाह	श्रम एवं सेवायोजन
25	श्री राजपाल त्यागी	ग्राम्य विकास
26	श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सैनिक कल्याण
27	श्री ख्वाजा हलीम	औद्योगिक विकास
28	श्री उज्ज्वल रमण सिंह	पर्यावरण
29	श्री कुंवर रघुराज प्रताप सिंह, राजा भैया	खाद्य एवं रसद
30	डा0 मैराजुद्दीन अहमद	सिंचाई

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

1	श्री कामेश्वर उपाध्याय	दुग्ध विकास
2	श्री दिनेश सिंह	अर्थ एवं संख्या, प्रशासनिक सुधार एवं मनोरंजन कर
3	श्री बाबू लाल	खाद्य प्रसंस्करण, राजनैतिक पेंशन, भाषा, मद्य निषेध तथा अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत
4	श्री वीरेन्द्र सिंह	वन
5	श्री वीरेन्द्र सिंह बुन्देला	कार्यक्रम कार्यान्वयन, राष्ट्रीय एकीकरण, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सा शिक्षा
6	श्री श्याम नारायण	विकलांग कल्याण, मत्स्य
7	श्री हाजी याकूब	अल्पसंख्यक, हज
8	श्री शारदानन्द अंचल	सहकारिता
9	श्री योगेश प्रताप सिंह	कृषि शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा
10	श्री राजेन्द्र सिंह राना	महिला कल्याण, संस्कृति, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स
11	श्री गंगा प्रसाद पुष्कर	ग्रामीण अभियंत्रण सेवा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राज्य मंत्री

क्रमांक	नाम	कार्य विभाग (पोर्टफोलियो)
1	2	3
1	श्री अजीत कुमार राजू	बेसिक शिक्षा
2	श्री अरविन्द कुमार सिंह गोप	लोक निर्माण
3	श्री इकबाल महमूद	राजस्व
4	श्री कैलाश	औद्योगिक विकास
5	श्री नारद राय	नगर विकास
6	श्री बनवारी सिंह यादव	प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन एवं राज्य सम्पत्ति
7	श्री मानपाल सिंह	माध्यमिक शिक्षा
8	श्री राम आसरे विश्वकर्मा	उच्च शिक्षा
9	श्री विनोद कुमार सिंह	चिकित्सा शिक्षा (आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सा को छोड़कर)
10	श्री सीताराम निषाद	कारागार
11	श्री सूरज सिंह शाक्य	कारागार
12	श्री शाहिद मंजूर	वित्त
13	श्री शैलेन्द्र यादव	आवास
14	श्री स्वामी ओइमवेश	गन्ना विकास
15	श्री संजय गर्ग	कर एवं निबन्धन (व्यापार कर)
16	श्री जय प्रकाश यादव	कृषि

नेता विरोधी दल
श्री लालजी टण्डन

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल

अध्यक्ष

श्री माता प्रसाद पाण्डेय

उपाध्यक्ष

श्री राजेश अग्रवाल

प्रमुख सचिव

श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

अधिष्ठाता मण्डल

1-श्री अरविन्द गिरि, सदस्य, विधान सभा (खीरी),
2-श्री बंशीधर राज, सदस्य, विधान सभा (खीरी),
3-श्री वसीम अहमद, सदस्य, विधान सभा (आजमगढ़),
4-श्री उदय राज यादव, सदस्य, विधान सभा (उन्नाव),
5-श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य, विधान सभा (रायबरेली),
6-डा0 लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (मेरठ),
7-श्री ओम प्रकाश सिंह, सदस्य, विधान सभा (मिर्जापुर),
8-श्रीमती विद्या चौधरी, सदस्य, विधान सभा (आजमगढ़),
9-श्री जगदीश नारायण राय, सदस्य, विधान सभा (जौनपुर),
10-श्री श्याम सूरत उपाध्याय, सदस्य, विधान सभा (इलाहाबाद)।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

चौदहवीं विधान सभा

सोमवार, दिनांक 21 अगस्त, 2006

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।)

उपस्थित सदस्य संख्या-276

अकीलुर्रहमान खां, श्री	मुरादाबाद
अखिलेश कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
अजय राय, श्री	वाराणसी
अजीम भाई, श्री	फिरोजाबाद
अताउल रहमान, श्री	बरेली
अनवर महमूद, श्री	बलरामपुर
अनार सिंह दिवाकर, श्री	एटा
अनिल कुमार पाण्डेय, श्री	सुल्तानपुर
अनिल कुमार मौर्य, श्री	मिर्जापुर
अनिल कुमार सिंह यादव, श्री	एटा
अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री	पीलीभीत
अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री	देवरिया
अन्सार अहमद, श्री	इलाहाबाद
अब्दुल कलाम, श्री	सन्त कबीर नगर
अब्दुल मन्नान, श्री	हरदोई
अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री	फतेहपुर
अमर सिंह परमार, श्री	आगरा
अमीता सिंह, श्रीमती	सुल्तानपुर
अम्बिका चौधरी, श्री	बलिया
अम्बेश कुमारी, श्रीमती	महोबा
अयोध्या प्रसाद पाल, श्री	फतेहपुर
अरविन्द कुमार सिंह उर्फ गोप, श्री	बाराबंकी
अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा0	जालौन
अरुणा तोमर, श्रीमती	कानपुर नगर
अलका राय, श्रीमती	गाजीपुर
अलगू प्रसाद चौहान, श्री	सन्त कबीर नगर
अवधेश कुमार वर्मा, श्री	शाहजहांपुर
अशोक कुमार कटियार, श्री	कानपुर देहात
अशोक बाजपेयी, डा0	हरदोई
अशोक सिंह चौहान, श्री	मैनपुरी
आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री	सिद्धार्थनगर
आर0एस0 कुशवाहा, श्री	खीरी
आर0 के0 चौधरी, श्री	लखनऊ
आर0 के0 सिंह पटेल, श्री	चित्रकूट
आलम बदी, श्री	आजमगढ़
आलोक कुमार शाक्य, श्री	मैनपुरी
आशा किशोर, श्रीमती	रायबरेली
आशीष यादव, श्री	बदायूं
आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री	बदायूं
इकबाल महमूद, श्री	मुरादाबाद
इन्द्रजीत सरोज, श्री	कौशाम्बी
उज्ज्वल रमण सिंह, श्री	इलाहाबाद
उदयभान करवरिया, श्री	इलाहाबाद
उदयराज यादव, श्री	उन्नाव
उमा किरन, श्रीमती	मुजफ्फरनगर
उमा शंकर कुशवाहा, श्री	गाजीपुर
ओमकार सिंह यादव, श्री	बदायूं
ओम प्रकाश, श्री	गाजीपुर
ओम प्रकाश (ओ0पी0 सिंह), श्री	सुल्तानपुर
ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री	सुल्तानपुर

ओम प्रकाश सिंह, श्री	मिर्जापुर
कपिल देव यादव, श्री	मऊ
कमलेश कुमार, श्री	गोरखपुर
कमलेश कुमार पाठक, श्री	कानपुर देहात
कमाल यूसुफ मलिक, श्री	सिद्धार्थनगर
कामेश्वर उपाध्याय, श्री	देवरिया
कालीचरन राजभर, श्री	गाजीपुर
किरन पाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
कुलदीप सिंह सेंगर, श्री	उन्नाव
कृष्ण कुमार उर्फ सतीश वर्मा, श्री	हरदोई
कृष्णा पासवान, श्रीमती	फतेहपुर
केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री	इलाहाबाद
कैलाश, श्री	गाजीपुर
कैलाश चौरसिया, श्री	मिर्जापुर
कौकब हमीद खां, श्री	बागपत
कौशल किशोर, श्री	लखनऊ
गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री	आगरा
गंगा बक्श सिंह, डा0	उन्नाव
गंगा भक्त सिंह, श्री	हरदोई
घूरा राम, श्री	बलिया
चन्द्र किशोर, श्री	महराजगंज
चन्द्रदेव राम यादव, श्री	आजमगढ़
चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री	श्रावस्ती
छेदी राम, श्री	गाजीपुर
छोटे लाल यादव, श्री	बाराबंकी
जगदम्बिका पाल, श्री	बस्ती
जगदीश नारायण (राय), श्री	जौनपुर
जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री	कुशीनगर
जगदीश सिंह राणा, श्री	सहारनपुर
जगदीश सोनकर,श्री	जौनपुर
जगराम सिंह, श्री	मुरादाबाद
जटाशंकर सिंह, श्री	बहराइच
जय प्रकाश यादव, श्री	गोरखपुर
जय प्रताप सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
जियाउद्दीन रिजवी, श्री	बलिया
ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री	महराजगंज
तेजपाल सिंह, श्री	मथुरा
दद्दू प्रसाद, श्री	चित्रकूट
दयाराम, श्री	कौशाम्बी
दया शंकर वर्मा, श्री	जालौन
दिनेश सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
दिलीप कुमार वर्मा, श्री	बहराइच
दीनानाथ कुशवाहा, श्री	देवरिया
दीनानाथ भाष्कर, श्री	सन्त रविदास नगर, भदोही
दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री	देवरिया
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री	आजमगढ़
देवकी नन्दन, श्री	हाथरस
देवेन्द्र प्रताप, श्री	एटा
देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	रायबरेली
द्वारिका प्रसाद, श्री	सन्त कबीर नगर
धर्मपाल सिंह, श्री	बरेली
धर्मराज निषाद, श्री	अम्बेडकरनगर
धर्म सिंह सैनी, डा0	सहारनपुर
धर्मेन्द्र कुमार कश्यप, श्री	बरेली
धू राम लोधी, चौधरी	हमीरपुर
नन्दिता शुक्ला, श्रीमती	गोण्डा
नरेन्द्र कुमार, श्री	गौतमबुद्ध नगर
नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा0	इलाहाबाद
नरेन्द्र सिंह वर्मा, श्री	सीतापुर
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
परमजीत, श्री	मुजफ्फरनगर
परमेश्वर दयाल, श्री	सोनभद्र
पीटर फैन्थम, श्री	नाम-निर्देशित
पीतम राम, श्री	पीलीभीत
प्रताप चौधरी, श्री	हाथरस
प्रदीप जैन "आदित्य", श्री	झांसी
प्रभु दयाल, श्री	मेरठ

प्रभु नारायण, श्री	चन्दौली
प्रमोद कुमार, श्री	प्रतापगढ़
प्रमोद गौड़, श्री	अलीगढ़
प्रागी लाल अहिरवार, श्री	झांसी
प्रेम पाल सिंह यादव, श्री	बदायूं
प्रेमलता कटियार, श्रीमती	कानपुर नगर
फागू, श्री	मऊ
बंशीधर राज, श्री	खीरी
बलराम यादव, श्री	आजमगढ़
बाबूराम, एम0काम, श्री	जालौन
बाबू लाल, श्री	गोण्डा
बाबू लाल, चौधरी	आगरा
बाबू लाल कुशवाहा, श्री	बांदा
बीजू पटनायक, श्री	गाजीपुर
बैजनाथ पासवान, श्री	मऊ
बैजनाथ दुबे, श्री	गोण्डा
भगवत शरन गंगवार, श्री	बरेली
भगेलू राम, श्री	सुल्तानपुर
भारतेन्द्र सिंह, कुंवर	बिजनौर
भूपेन्द्र सिंह, श्री	बदायूं
मतेश चन्द्र सोनकर, श्री	कौशाम्बी
मदन गोपाल वर्मा, श्री	फतेहपुर
मदन चौहान, श्री	गाजियाबाद
मदन भैया, श्री	बागपत
मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री	रायबरेली
मशहूद खां, श्री	बलरामपुर
मस्तराम चौ0, एडवोकेट	उन्नाव
महबूब अली, श्री	ज्योतिबाफूले नगर
महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीन बाबू, श्री	सीतापुर
महेन्द्र सिंह, चौधरी	अलीगढ़
महेन्द्र सिंह यादव, श्री	बुलन्दशहर
महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री	इटावा
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री	सिद्धार्थनगर
मान पाल सिंह, श्री	एटा
माया प्रसाद, श्रीमती	खीरी
मिथिलेश कुमार, श्री	शाहजहांपुर
मुकुट बिहारी वर्मा, श्री	बहराइच
मुकुल उपाध्याय, श्री	अलीगढ़
मुलायम सिंह यादव, श्री	बदायूं
मुंशीलाल गौतम, श्री	बुलन्दशहर
मूलचन्द्र चौहान, ठाकुर	बिजनौर
मोहन देव शंखवार, श्री	फिरोजाबाद
मोहम्मद आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री	मुरादाबाद
मोहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
मोहम्मद इरशाद खां, श्री	लखनऊ
मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री	इलाहाबाद
मोहम्मद रिजवान, श्री	मुरादाबाद
मोहम्मद शफीर, श्री	फतेहपुर
यशपाल चौधरी, श्री	खीरी
याकूब, हाजी	मेरठ
योगेन्द्र कुमार, श्री	बदायूं
योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री	गोण्डा
रंगनाथ मिश्र, श्री	संत रविदास नगर, भदोही
रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री	कुशीनगर
रवीन्द्र पुण्डीर, प्रो0	मेरठ
राकेश कुमार वर्मा, श्री	बाराबंकी
राज किशोर सिंह, श्री	बस्ती
राजनाथ यादव, श्री	वाराणसी
राजपाल त्यागी, श्री	गाजियाबाद
राजपाल सिंह सैनी, श्री	मुजफ्फरनगर
राजरानी रावत, श्रीमती	बाराबंकी
राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती	बाराबंकी
राजा राम, श्री	प्रतापगढ़

राजीव कुमार सिंह, श्री	बाराबंकी
राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री	प्रतापगढ़
राजेन्द्र प्रसाद यादव, श्री	लखनऊ
राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री	एटा
राजेन्द्र सिंह राणा, श्री	सहारनपुर
राजेश अग्रवाल, श्री	बरेली
राजेश कुमार, श्री	खीरी
राधेश्याम जायसवाल, श्री	सीतापुर
राम अचल राजभर, श्री	अम्बेडकर नगर
राम करन आर्य, श्री	बस्ती
राम किशुन, श्री	चन्दौली
राम कृपाल, श्री	इलाहाबाद
राम गोविन्द चौधरी, श्री	बलिया
राम चन्द्र यादव, श्री	फैजाबाद
रामपाल यादव, श्री	सीतापुर
राम पाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री	कन्नौज
राम प्रताप सिंह, श्री	गोण्डा
रामबाबू हरित, डा0	आगरा
राम बिशुन आजाद, श्री	गोण्डा
राम भुआल निषाद, श्री	गोरखपुर
राम मगन, श्री	बाराबंकी
राम लाल अकेला, श्री	रायबरेली
रामवीर उपाध्याय, श्री	हाथरस
रामवीर सिंह, श्री	फिरोजाबाद
राम सेवक, श्री	सुल्तानपुर
रामहेत भारती, श्री	सीतापुर
रामेश्वर सिंह यादव, श्री	एटा
रिजवान अहमद खां, श्री	ज्योतिबाफूले नगर
रियाज अहमद, श्री	पीलीभीत
लल्लू सिंह, श्री	फैजाबाद
लालजी टण्डन, श्री	लखनऊ
लालजी वर्मा, श्री	अम्बेडकर नगर
लाल बहादुर यादव, श्री	जौनपुर
लुईस खुर्शीद, श्रीमती	फर्रुखाबाद
विजय कुमार मिश्रा, श्री	सन्त रविदास नगर, भदोही
विजय बहादुर पाल, श्री	कन्नौज
विजय सिंह, श्री	सोनभद्र
विद्या चौधरी, श्रीमती	आजमगढ़
विद्या सागर गुप्ता,श्री	लखनऊ
विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री	गोण्डा
विनोद कुमार सिंह, श्री	जौनपुर
विनोद तिवारी, डा0	पीलीभीत
विमला राकेश, श्रीमती	सहारनपुर
विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री	बांदा
विश्राम सिंह यादव, श्री	हरदोई
वीरेन्द्र सिंह गंगवार, श्री	बरेली
वीरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
वेदराम भाटी, श्री	बुलन्दशहर
शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री	सन्त रविदासनगर, भदोही
शब्बीर, श्री	बहराइच
शरदवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
शहजिल इस्लाम, श्री	बरेली
शाकिर अली, श्री	देवरिया
शारदा देवी, श्रीमती	गोरखपुर
शारदा नन्द अंचल, श्री	बलिया
शारदा प्रसाद,श्री	चन्दौली
शाहिद मंजूर, श्री	मेरठ
शिव चरन प्रजापति, श्री	हमीरपुर
शिव तपस्या पासवान, श्री	चन्दौली
शिव प्रताप यादव, डा0	बलरामपुर
शिशुपाल सिंह यादव, श्री	एटा
शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री	जौनपुर
श्यामदेव राय चौधरी, श्री	वाराणसी
श्याम लाल रावत, श्री	सीतापुर

श्याम सूरत उपाध्याय, श्री	इलाहाबाद	सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री	वाराणसी
श्रद्धा यादव, श्रीमती	जौनपुर	सुरेश कुमार खन्ना, श्री	शाहजहांपुर
श्रीराम भारती, श्री	मिर्जापुर	सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री	लखनऊ
संजीव दरियाबादी, श्री	कानपुर नगर	सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री	लखनऊ
सतीश महाना, श्री	कानपुर नगर	सुल्तान बेग, श्री	बरेली
सदल प्रसाद, श्री	गोरखपुर	सुशील चौधरी, डा0	सहारनपुर
सन्ध्या कटेरिया, कु0	मैनपुरी	सूरज सिंह शाक्य, श्री	एटा
सलिल विश्नोई, श्री	कानपुर नगर	सोमारू राम सरोज, श्री	जौनपुर
सिद्ध गोपाल साहू, श्री	महोबा	सोवरन सिंह, श्री	मैनपुरी
सियाराम सागर, डा0	बरेली	स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री	रायबरेली
सीताराम निषाद, श्री	फैजाबाद	हरि प्रताप सिंह, श्री	प्रतापगढ़
सुखदेव राजभर, श्री	आजमगढ़	हरि शंकर तिवारी, श्री	गोरखपुर
सुखदेवी वर्मा, श्रीमती	इटावा	हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव	
सुन्दर सिंह, श्री	बुलन्दशहर	"हरीश जी", श्री	वाराणसी
सुरेन्द्र कुमार मुन्नी, श्री	गाजियाबाद	हुकुम सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	जौनपुर	होशियार सिंह, श्री	बुलन्दशहर

नोट :- परिवार कल्याण मंत्री (श्री अहमद हसन), सिंचाई मंत्री (डा0 मैराजुद्दीन अहमद) तथा बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (श्री अजीत कुमार राजू) भी सदन में उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राष्ट्रीय-गीत

श्री अध्यक्ष-

"वन्दे मातरम्।"

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।।

सुजलाम्।

सुफलाम्।

मलयज शीतलाम्।

शस्य श्यामलाम्।

मातरम्। वन्दे मातरम्।।

शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्

फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्

सुहासिनीम्

सुमधुर भाषिणीम्

सुखदाम्

वरदाम्

मातरम्। वन्दे मातरम्।।

वर्तमान विधान सभा के सदस्य हाजी मुश्ताक सोलंकी तथा श्री राम स्वरूप सिंह के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सदन को सूचित करते हुए मुझे गहरा दुःख है कि हमारे सदन के दो वर्तमान सदस्य, जो पिछले सत्र में एक अच्छे माहौल के वातावरण की स्थिति में, खुशी में हम लोग निकले थे, आज हमारे इस सदन में हमेशा-हमेशा के लिए उपस्थित नहीं है।

श्री मुश्ताक सोलंकी समाजवादी पार्टी के दो बार विधायक रहे। पहले 1996 में, फिर 2002 में वे कानपुर नगर के समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष भी रहे। उनके जनाजे ने यह साबित कर दिया कि वह कितने लोकप्रिय थे। सभी धर्म और जाति से उठकर कांस्टीट्यूएन्सी की जनता के लिए काम करते थे, उनके जनाजे में कानपुर और आसपास के जनपदों से लाखों लोग जुटे थे। वह हमेशा गरीबों के मोहल्ले में जाते थे और गरीबों के बीच में जाते थे और जिस गरीब को देखते थे...। वह निकलते थे तो अपने साथ एक आदमी को रखते थे उससे कहते थे कि इनकी जैसे हो, मदद कर दो। ऐसे समाजवादी के रूप में उभरकर कानपुर जैसे महानगर में वह थे। वह बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी समझ, उनकी सूझ और उद्योग के क्षेत्र में भी उन्होंने सम्मान पाया। आज वह हमारे बीच में

नहीं है। हम सभी दुखी हैं। केवल हमारा दल ही नहीं, सारे दलों ने उनके निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त की थी। उनके जनाजे में भी सब शामिल हुए थे।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि ऐसा समाजसेवी और नेता हमारे बीच से चला गया है, हमारी संवेदना उनके परिवार तक, उनके शुभचिन्तकों तक पहुंचाने की कृपा करें।

दूसरे हमारे मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी के नेता श्री राम स्वरूप सिंह वे इस सदन के तीन बार सदस्य रहे। 1993, 1996 और 2002 में लगातार सदस्य रहे। वह एक शिक्षक थे और उन्होंने प्रारम्भ से ही समाज में किसी भी स्तर तक असमानता और भेदभाव का विरोध किया। हमेशा गरीब और किसानों की लड़ाई लड़ते रहे। गन्ना किसानों का कई बार आन्दोलन करते हुए जेल गये। आज पूरा सदन अनुभव कर रहा है कि उनके सदन में न रहने से, हमारे सदन की एक शोभा थे, उनका एक सम्मान था, जब खड़े होकर बोलते थे उस कोने से कितना ही गम्भीर सदन क्यों न हो, वह ऐसी बात रखते थे कि गम्भीरता ही खत्म हो जाती थी। कितना भी तनाव होता था, वह बीच में खड़े होकर अपनी बात रखते थे। उनका बात रखने का तरीका, उसका प्रस्तुतीकरण हम सबको हमेशा याद रहेगा। इस सदन की सेवा और सदन के बाहर समाज और प्रदेश की सेवा में वह हमेशा लगे रहे, उसको हमेशा याद रखा जायेगा। इतनी सादगी से, इतनी ईमानदारी से उन्होंने अपने जीवन को बिताया और वह बिल्कुल बेबाक होकर अपनी बात रखते थे, किसी की नाराजगी की उन्होंने परवाह नहीं की। आज हम और पूरा सदन उनके निधन से दुखी है। मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी और मेरे दल की ओर से उनके दल और उनके परिवार तक शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

*नेता विरोधी दल (श्री लालजी टण्डन)-

मान्यवर, कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता, उसकी पापुलरिटी, लोकप्रियता, उसकी मृत्यु के बाद ही मालूम होती है। हाजी मुश्ताक सोलंकी से जो भी मतभेद रहे हों, जिस समय उनकी मृत्यु हुयी है, बहुत बड़ा जनसैलाब उमड़ा था, उनकी अर्थी में। वह अपने में साबित करता है कि जनता में उनकी लोकप्रियता कितनी थी। इस सदन में वह बड़े शान्त रहते थे और कभी किसी से उनकी तकरार नहीं हुयी। आज वह हमारे बीच में नहीं है मेरी और मेरे दल की संवेदना उनके परिवार तक प्रेषित करने की कृपा करें।

माननीय राम स्वरूप सिंह जी अपनी तरह के एक ही व्यक्ति थे, जो हर बात के ऊपर बहुत निर्भीक होकर अपनी बात बोलते थे। इस सदन में बुजुर्गी के नाते, वरिष्ठता के नाते लोग उनकी बात मानते थे और उनका आदर करते थे, आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और शोक व्यक्त करते हैं। मेरा अनुरोध है कि उनके परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य-

माननीय अध्यक्ष जी, इसी विधान सभा में पिछले सत्र के दौरान जब यह सदन बैठा था तो हमारे दो सम्मानित सदस्य पहले हाजी मुश्ताक सोलंकी और दूसरे बहुत ही वरिष्ठ सदस्य श्री राम

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

स्वरूप जी हम लोगों के साथ सदन में बैठते थे। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। पिछले सत्र और इस सत्र के बीच में इनका आकस्मिक निधन हो गया। इनके निधन के परिप्रेक्ष्य में माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष ने जो अपनी संवेदनायें व्यक्त की हैं, उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यूं तो मृत्यु जन्म के साथ ही सुनिश्चित हो जाती है। जो भी पैदा होता है, उसका मरना उतना ही सुनिश्चित होता है। हाजी मुश्ताक सोलंकी जी अभी मात्र 45-46 वर्ष के ही थे, बहुत ही नौजवान थे, उत्साही थे और लगातार 1996, 2002 में निर्वाचित होकर इस माननीय सदन के सदस्य के रूप में विधान सभा में पहुंचे। उनमें से श्री मुश्ताक सोलंकी जो दो बार लगातार इस सदन के सदस्य रहे और नौजवान विधायक के रूप में काम करने के प्रति उनका उत्साह था। उनकी अच्छी छवि थी, उनकी जो लोकप्रियता थी, उसका अन्दाजा उनके जनाजे में उमड़ी भीड़ से लगाया जा सकता है। श्री सोलंकी दो-दो बार लगातार इस सदन में हम लोगों के साथ बैठते रहे, कभी किसी से नोकझोंक नहीं हुई, वह शांति स्वभाव के थे और साथ ही साथ उन्हें तमाम समितियों याचिका समिति, प्राक्कलन समिति में सदस्य के रूप में काम करने का अवसर मिला। श्री सोलंकी जैसे एक नौजवान, कुशल, उत्साही, प्रखर समाजसेवी एवं उदीयमान राजनेता को हमने खो दिया है। श्री सोलंकी जी के निधन से जो रिक्तता आई है यद्यपि हम उसकी भरपाई नहीं कर सकते लेकिन मान्यवर, इस सदन के माध्यम से मैं बहुजन समाज पार्टी की ओर से उनके प्रति शोक-संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और मान्यवर, आपसे अनुरोध करता हूं कि हम लोगों की भावनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, हमारे दूसरे माननीय सदस्य श्री राम स्वरूप सिंह जी, जो लगातार तीन बार वर्ष 1993, वर्ष 1996 और वर्ष 2002 में नजीराबाद, बिजनौर से निर्वाचित हो करके इस माननीय सदन के सदस्य के रूप में यहां पर आये। यद्यपि वह राजनीतिक होने के साथ-साथ पेशे से अध्यापक भी थे, अध्यापक के रूप में जिस तरीके से वह स्कूलों में बच्चों को पढ़ाते थे, उसी तरह से जब हम लोग सदन में बैठते थे तो वह अपने अनुभवों से हमें भी सीख देते थे। इसके साथ ही साथ उनमें स्पष्टवादिता थी, इस तरीके से अपनी बातों को वह सदन के पटल पर रखते थे, किसी प्रकार की रंचमात्र भी कभी भी हिचकिचाहट वह नहीं रखते थे, वह अपनी बातों को मजबूती के साथ रखते थे। क्षेत्रीय समस्याओं को वह पुरजोर तरीके से मजबूती के साथ उठाते थे, यद्यपि स्वास्थ्य से वह कमजोर जरूर थे लेकिन जब वह जन-समस्याओं को सदन के पटल पर रखते थे तो किसी भी नौजवान से ज्यादा उत्साही तरीके से वह अपनी बातों को सदन के पटल पर रखते थे। स्वाभाविक है कि ऐसे ओजस्वी, ऐसे प्रखर नेता, जो स्पष्ट तरीके से क्षेत्रीय समस्याओं को समय-समय पर सदन के पटल पर रखते थे, आज हमारे बीच में नहीं है। वह अध्यापक होने के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े थे, जैसे वह जनपद बिजनौर में रविवंश समाज के दस वर्ष तक अध्यक्ष रहे, आर्य समाज में भी उन्होंने मंत्री के रूप में और किसान सभा में जिला अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पांच-पांच वर्ष तक काम किया। शिक्षक संघ के भी मंत्री के रूप में उन्होंने 5 वर्ष तक कार्य किया, विभिन्न संस्थाओं से और विभिन्न पदों के माध्यम से उन्होंने समाज और राजनीतिक क्षेत्र में हमेशा क्रांतिकारी काम किया, वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। हम अपनी ओर से एवं बहुजन समाज पार्टी की ओर से उनको

श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। श्री राम स्वरूप सिंह जी, हमारे बहुत ही वरिष्ट माननीय सदस्य थे, उनके निधन से जो रिक्ति हुई है यद्यपि हम सब मिलकर उसकी भरपाई नहीं कर सकते लेकिन फिर भी हम सभी लोग बहुजन समाज पार्टी की ओर से उन्हें शोक संवेदना व्यक्त करते हैं और मान्यवर, आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारी इस भावना को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

महिला कल्याण, संस्कृति, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) (श्री राजेन्द्र सिंह राणा)-

माननीय अध्यक्ष जी, हाजी मुश्ताक सोलंकी बहुत ही लोकप्रिय और चिन्तनशील एक युवा नेता थे। सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी गहरी रुचि थी, उनका युवावस्था में निधन हो जाना न केवल सदन के लिए वरन कानपुर जैसे महानगर और उसके निवासियों के लिए एक दुःखद विषय है। श्री हाजी मुश्ताक के व्यक्तिगत जीवन को मैं बहुत ज्यादा नहीं जानता हूं परन्तु जब कभी भी वह सदन में मिलते थे तो बहुत अच्छे स्वभाव से और हर विषयों पर अच्छी रुचि रखने वाले विधायक के रूप में उनकी पहचान थी, पिछले सत्र के दौरान उनसे मुलाकात हुई और काफी देर तक वार्ता भी हुई। उनके निधन के बाद प्रिन्ट मीडिया में जिस तरह से लोगों की भीड़ दिखायी दी ऐसे कम ही नेताओं से जनता का इतना लगाव देखने को मिलता है। मात्र 45 साल की उम्र में हमारे बीच से चले जाना निःसंदेह बहुत दुःखद बात है। जहां तक सोलंकी जी का सवाल है, वह मेरे पास एक दिन बैठे थे उन्होंने जिस तरह की अपनी व्यथा समाज के प्रति और समाज के गरीब लोगों के प्रति उन्होंने मुझसे व्यक्तिगत बात के दौरान बतायी उससे मुझे लगा कि ऐसे नेता का असमय में निधन निश्चित रूप से बहुत ही दुखद है। मैं अपनी और अपने साथियों की ओर से उनके निधन पर शोक व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी भावनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

दूसरे वरिष्ठ नेता श्री राम स्वरूप सिंह जी जो कि सदन में हर विषय पर अपनी बेबाक टिप्पणी के लिए जाने जाते थे। सहारनपुर और बिजनौर बहुत ही समीपवर्ती जिले हैं वहां प्रायः आना-जाना रहता है। ऐसे समय में, जब इस भौतिक युग में हर आदमी धन के पीछे, अच्छी व्यवस्थाओं के प्रति भागता है, उन्होंने कभी इसको महत्व नहीं दिया। माननीय राम स्वरूप सिंह जैसे नेता बहुत ही छोटे-छोटे विषय पर जानकारी रखते थे, उनकी समाज के प्रति जुड़ाव और गरीबों के प्रति सदैव चिन्ता हमको प्रेरणा देती है कि युवा पीढ़ी के लोग ऐसे लोगों को अपना आदर्श मानें और उनसे प्रेरणा लें और उस आधार पर काम करें। मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और मा0 नेता बहुजन समाज पार्टी द्वारा श्री राम स्वरूप सिंह जी के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचारों से अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक-संवेदनायें उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री प्रमोद कुमार-

माननीय अध्यक्ष जी, सोलंकी जी के निधन पर जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, नेता ब0स0पा0 और राणा साहब ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हूं और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। सोलंकी साहब की जो लोकप्रियता कानपुर में और उनके क्षेत्र में थी मान्यवर, वह किसी के लिये प्रेरणा का विषय हो सकती है। लोग उनके जनाजे में उमड़े जन सैलाब की बात कर रहे थे। मैं उनके निधन के बाद अपने साथी संजीव दरियाबादी और अजय कपूर जी के साथ उनके घर गया मातमपुर्सी के लिये। मान्यवर, मुझे वहां एक सूची मिली, उनके परिवार जनों ने दिखायी जो उनके पास थी कि कितने लोग बीमार हैं उनके क्षेत्र में और उनके इलाज के लिये उनके पास पैसे नहीं हैं और सोलंकी साहब को उनकी व्यवस्था करनी थी और वह निरन्तर व्यवस्था करते रहते थे। उन्होंने एक सूची बना रखी थी कि किनके घर में खाने का कोई जरिया नहीं है और उनके लिये राशन पहुंचाने की जिम्मेदारी उनकी अपनी होती थी। मान्यवर, ऐसे जनप्रतिनिधि आज बहुत कम मिलते हैं। मान्यवर, उनके निधन पर मैंने अपना एक मित्र खो दिया है। एक साथी खो दिया है और इस सदन ने एक ओजस्वी कार्यकर्ता और गरीबों की आवाज उठाने वाला अपना हमदर्द खो दिया है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

यह विश्वास नहीं होता कि मेरे बगल बैठने वाले मास्टर राम स्वरूप जी अब हमारे बीच में नहीं रहे। मान्यवर, जीवन भर जिन सिद्धान्तों के लिये वह जिये, उन सिद्धान्तों को अपनी आखिरी सांस तक वह समेटे रहे। आज के इस युग में जब राजनीतिक आस्थायें बहुत महत्व नहीं रखती, मास्टर राम स्वरूप जैसे लोग किसी के लिये प्रेरणा और आदर्श के स्रोत हो सकते हैं। इस सदन में जब कभी किसी विषय पर उनसे बोलने के लिये कहा जाता था, कभी वह किंचित भी अपनी विचारधारा से समझौता नहीं करते थे। मान्यवर, चाहे वह अकेले रहे लेकिन सदन में अपनी बात निर्भीकता पूर्वक कहते थे। उनका एक और विलक्षण व्यक्तित्व था। मान्यवर, जो इस सदन में नहीं बल्कि सदन की दोनों लाबियों में लोग उसका दिव्य दर्शन करते थे। मान्यवर, वह बैठ जाते थे सारे विधायक उन्हें घेर लेते थे वे चुटकुलों, कहानियों, किस्सों के चलते-फिरते इंसाइक्लोपीडिया थे मान्यवर, इतनी कहानियां, इतने चुटकुले उनके पास संग्रहीत थे कि कभी खत्म न होने वाला खजाना था, मान्यवर, अक्सर वह सदन की "नो" लाबी हो, "यस" लाबी हो उसमें बैठ जाते थे और सभी को सुनाते रहते थे।

मान्यवर, आज राजनीति में जो बहुत सी उंगलियां उठती हैं राम स्वरूप जी का जीवन उसका जवाब था। जिस गरीबी में वो जीते थे, जिस मुफलिसी में वो जीते थे और जिस तरह मिलने वाले अपने वेतन को कितना पार्टी में देते थे, कितना अपने ऊपर खर्च करते थे, कितना अपने क्षेत्र पर खर्च करते थे वह व्यथा और कहानी कहती है कि वह एक ईमानदार व्यक्ति थे। मान्यवर, राम स्वरूप जी के निधन के साथ कम्युनिस्ट पार्टी का एक मजबूत सितारा ही नहीं अस्त हुआ है बल्कि हम लोगों का एक हमदर्द, एक दोस्त, जिन्दादिल साथी भी हमसे विदा हुआ हैं। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से मान्यवर, उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और एक आग्रह मुख्य मंत्री जी से जरूर करना चाहता हूं कि इन सदस्यों को जो हमारे बीच रहते हैं जब विदा लेते हैं तो मान्यवर, हम फर्ज अदायगी श्रद्धांजलि के रूप में जरूर करते हैं लेकिन मेरा सुझाव है, अगर पसन्द आये मुख्य मंत्री जी को, नेता विरोधी दल को, तो राम स्वरूप जी की स्मृति में वह जीवन भर एक विद्यालय चाहते थे अपने क्षेत्र के लिये यदि सरकार एक विद्यालय खोले और राम स्वरूप जी के नाम से ही उस विद्यालय की स्थापना

कर दे तो मैं समझता हूं कि यह सदन की सच्ची श्रद्धांजलि उनके प्रति होगी। यही सोलंकी जी के लिये भी किया जा सकता है। उनकी स्मृति में उनके परिवार जनों की इच्छा के मुताबिक, सरकार के संसाधन के मुताबिक उनकी याद को जीवित रखने के लिये कोई काम किया जाना चाहिये और मैं तो यह कहूंगा कि एक परम्परा यह बन जानी चाहिये कि जो माननीय सदस्य हमसे विदा लें शासन सदन उनके नाम को स्थायी करने के लिये सिर्फ श्रद्धासुमन न अर्पित करे बल्कि उनके जीवन से दूसरे प्रेरणा ले सकें। इसलिये उनकी स्मृति में कोई संस्थान या शिक्षा सदन या कोई ऐसी चीज खोली जाय तो अच्छी परम्परा होगी, धन्यवाद।

पर्यटन मंत्री (श्री कौकब हमीद)-

मान्यवर, हाजी मुश्ताक सोलंकी जी इस सदन के सदस्य थे, वह दो बार सदस्य रहे, 1996 में और 2002 में। मान्यवर, इतनी कम आयु में वह हमें छोड़कर चले गये यह यकीन नहीं होता है। वैसे तो वह समाजवादी पार्टी के सदस्य थे उसी से एम0एल0ए0 थे मगर उनके जनाजे पर जो लोग वहां शरीक हुये, जिन लोगों ने देखा तो यह साबित हो गया कि जो काम करता है जो जनता को प्यारा होता है वह पूरे शहर को प्यारा लगता है। उस इन्सान को देखकर आंखें नम हो गयीं। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करता हूं और चाहूंगा कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राम स्वरूप जी जो तीन बार इस सदन के सदस्य रहे। वर्ष 1993, 1996, 2002 में हमें यकीन नहीं होता कि वह हमारे बीच नहीं रहे। अभी कुछ दिन पहले पिछली कैबिनेट जो थी उसके पहले की कैबिनेट के दिन वह पंचम तल पर मिल गए वहीं पर हम बैठ गए और उनके साथ हंसी-मजाक करने लगा जैसा कि श्री तिवारी जी ने कहा कि उनके पास कहानी और चुटकुलों का भण्डार था। दो दिन बाद उनके निधन की जब खबर सुनी तो दिमाग मानने के लिए तैयार नहीं हुआ कि वह हमारे बीच नहीं रहे। मैं उनके यहां बिजनौर गया था उनके गांव में उनके घर को देखकर यह पता चलता है कि जो किस्सा कहानियों में सुना था कि यह अन्दाज भी जीने का और यह अन्दाज भी रहने का होता है वह सच होता है। मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से संवेदना व्यक्त करता हूं और चाहता हूं कि हमारी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

(श्री श्याम सुन्दर शर्मा का नाम पुकारे जाने एवं उनके अनुपस्थित होने पर)

*श्रीमती प्रेमलता कटियार-

अध्यक्ष महोदय, स्व0 हाजी मुश्ताक सोलंकी के निधन के संदर्भ में अभी नेतागणों ने जो विचार व्यक्त किए हैं उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुए मैं कहना चाहती हूं चूंकि वह हमारे निवास क्षेत्र की विधान सभा क्षेत्र के जनप्रतिनिधि थे इसलिए मैंने उन्हें बहुत निकट से सर्वहारा वर्ग के लिए अन्याय के खिलाफ लड़ते हुए देखा है उनकी कार्यशैली ने निश्चित रूप से समाज में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है और मैं यहां पूरी शिद्दत के साथ यह कहना चाहती हूं कि वह अपने क्षेत्र में ही नहीं पूरे नगर में कमजोर तबके के लिए न्याय दिलाने के लिए किसी भी हद तक सर्वसुलभ थे व लड़ते थे।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

इन वर्गों ने अपना मसीहा खोया है वहीं बिना किसी भेदभाव के ईद हो या दीवाली हो होली हो या दशहरा उनकी उपस्थित प्रत्येक अपने पास अनुभव करता था उनकी यह कुशलता थी इसलिए उन्होंने लोगों के हृदय में गहरी पैठ बनाई थी उनकी रिक्तता निश्चित रूप से खलने वाली है मैं आपसे सादर आग्रह करना चाहूंगी कि उनके परिवार तक मेरी भावनाएं मेरी सद्कामनाएं पहुंचाने की कृपा करें। साथ ही हमारे सदन के वरिष्ठ सदस्य स्व0 राम स्वरूप जी को सदन ने अपने गम्भीर चिन्तन के साथ प्रदेश के सोशल वेलफेयर के मामले में चिन्तन करते हुए देखा ही नहीं है बल्कि सुना है। उनका चिन्तन समाज के कमजोर वर्गों के प्रति महिलाओं के उत्थान के प्रति था, निर्धन आय वर्ग के लोगों के प्रति जो था आज वह सदन के अभिलेखों में थाती के रूप में है। उनके निधन से बहुत बड़ी क्षति हुई है। मैं चाहती हूं कि उनके प्रति हमारी भावनाओं को कृपापूर्वक उनके परिवारीजनों तक भिजवाने की कृपा करें।

*श्री राम कृपाल-

आदरणीय अध्यक्ष महोदय आज हाजी मुश्ताक सोलंकी हमारे बीच नहीं हैं सन् 1996 में मैं भी चुनकर आया था और वह भी चुनकर आए थे हम दोनों लोग साथ में बैठते थे किस तरह से वह हमारे साथ रहा करते थे उनसे प्रेरणा लेते थे आज वह हमारे बीच नहीं हैं इससे सदन काफी दुखी है मैं चाहूंगा कि माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता बहुजन समाज पार्टी और सभी माननीय नेताओं ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं उनके साथ हमारी संवेदनाएं भी शोक संतप्त परिवार तक पहंचा दी जायं।

दूसरे सदस्य राम स्वरूप सिंह जी, जो हमारे नेता थे, उनका निधन हो गया है। उनके निधन से कम्युनिष्ट पार्टी पर ही नहीं मजदूर किसान आन्दोलन पर भी गहरा संकट आ गया है और उसकी भरपाई नहीं हो सकती है। आज उनके निधन से पूरा सदन दुखी है। हम चाहते हैं कि अन्य सभी नेताओं ने जो शोक सम्वेदनाएं व्यक्त की हैं उनके साथ हमारी शोक सम्वेदनाएं भी उनके परिवार तक पहुंचा दी जायं।

श्री अध्यक्ष-

उत्तर प्रदेश विधान सभा के वर्तमान सदस्य हाजी मुश्ताक सोलंकी का 2 जून, 2006 को अपराह्न में दिल्ली में निधन हो गया। वे लगभग 45 वर्ष के थे। हाजी मुश्ताक सोलंकी का जन्म 1961 में कानपुर में हुआ था। उन्होंने हाई स्कूल तक शिक्षा ग्रहण की थी। हाजी मुश्ताक सोलंकी वर्ष 1996 तथा 2002 में निर्वाचन क्षेत्र आर्य नगर, जिला कानपुर नगर से समाजवादी पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। हाजी मुश्ताक सोलंकी दो वर्ष समाजवादी पार्टी, कानपुर के नगर अध्यक्ष रहे थे। वे वर्ष 1997-98 में विधान सभा की प्राक्कलन समिति तथा वर्ष 2002-03 में याचिका समिति के सदस्य रहे थे। उन्होंने हज एवं भ्रमण के उद्देश्य से क्रमशः सऊदी अरब तथा नैपाल की यात्रा की थी जनसेवा में उनकी विशेष रुचि थी तथा निर्धनों की सहायता करना उन्हें प्रिय था। हाजी मुश्ताक सोलंकी के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के वर्तमान सदस्य श्री राम स्वरूप सिंह का 15 अगस्त, 2006 को प्रातः निधन हो गया। वे लगभग 77 वर्ष के थे। श्री राम स्वरूप सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1929 को साहनपुर, जिला बिजनौर में हुआ था। उन्होंने बी0टी0सी0 की शिक्षा ग्रहण की थी। श्री राम स्वरूप सिंह वर्ष 1993, 1996 तथा 2002 में लगातार निर्वाचन क्षेत्र नजीबाबाद, जिला बिजनौर से भारत की कम्युनिष्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे। श्री राम स्वरूप सिंह उत्तर प्रदेश विधान सभा की कार्य-मंत्रणा समिति सहित कई समितियों के सदस्य थे। वे सत्याग्रह, गन्ना आन्दोलन और भारत बन्द आन्दोलन में जिला कारागार, बिजनौर में बन्दी रहे थे। वे प्राथमिक शिक्षक संघ के मंत्री 5 वर्ष और अध्यक्ष 10 वर्ष, जिला रविवंश समाज, बिजनौर के अध्यक्ष 10 वर्ष, आर्य समाज, साहनपुर के मंत्री 5 वर्ष तथा जिला किसान सभा के जिला अध्यक्ष 5 वर्ष रहे थे। जनसेवा एवं जन सम्पर्क में उनकी विशेष रुचि थी। श्री राम स्वरूप सिंह के निधन से प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया जो भावनाएं माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष और अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं, आप सबकी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचा दी जायेंगी। हम सब खड़े होकर दो मिनट का मौन रखेंगे।

(दिवंगत आत्माओं की शांति के लिये सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए।)

श्री मुलायम सिंह यादव-

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक दुःखद सूचना आपके माध्यम से माननीय सदन को देना चाहता हूं। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रह चुके सूरज भान जी ...

"भारत रत्न" प्रसिद्ध शहनाई वादक, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के निधन पर शोकोद्गार

श्री अध्यक्ष-

अभी उस्ताद बिसमिल्लाह खां के बारे में कहिये। इनका तो कल लिया जायेगा।

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

हम तो इनका अलग से लेना चाहते थे लेकिन सब नेताओं की राय है तो ले लेते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वह केवल देश के लिए ही नहीं वरन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बेताज बादशाह शहनाई के थे। आज वह हमारे बीच नहीं रहे। वह बहुत पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन अपनी तपस्या और मेहनत के बल पर सबसे कठिन वाद्य शहनाई को आम जनता तक पहुंचाने का काम किया। वह बचपन से ही बनारस आ गए थे। बनारस में विश्वनाथ मंदिर के पास अपनी शहनाई बजाते थे। शहनाई के सात रंग के स्वर से इन्होंने पूरे बनारस को ही नहीं, पूरे प्रदेश, पूरे देश को अचम्भे में डाल दिया। 15 अगस्त, 1947 को लालकिले से शहनाई बजाकर, हिन्दुस्तान से लेकर सारी दुनिया को विस्मित कर दिया। उन्होंने शहनाई में अपनी मेहनत और अपनी लगन, निष्ठा से इस कला को सारे विश्व के अन्दर पहुंचाया। उन्हें कई बार सम्मानित किया गया। 1961 में उन्हें "पद्मश्री" 1979 में "पद्मभूषण", 1980 में "पद्मविभूषण" और 2001 में "भारत रत्न" की उपाधि भी दी गई। 1994 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा "यशभारती" से सम्मानित किया गया। मध्य प्रदेश की सरकार ने इनको "तानसेन" की उपाधि देकर सम्मानित किया। उन्होंने अपना सम्मान खुद अपनी तपस्या के

बल पर पाया। वह ऐसे नहीं थे कि उनकी इच्छा हो कि उन्हें सम्मान दिया जाए, लेकिन जिस तरह से शहनाई के माध्यम से तपस्या और मेहनत से गंगा-जमुनी तहजीब को कायम रखा, पूरे समाज को एक दृष्टि से देखा और अपना प्रभाव छोड़ा, आज एक युग समाप्त हुआ है शहनाई का। अब उनके चारों लड़के शहनाई को आगे ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। पांचवां लड़का उनका तबलावादक है। हमें अफसोस है कि एक युग समाप्त हो गया है। कुछ लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होते हैं, फिर भी कुछ कर जाते हैं। जिस तरह से उन्होंने अपनी बुद्धि से, अपने दिमाग से शहनाई को आम जनता के बीच पहुंचाया, हमारे सामने भावना का, सारी दुनिया के अन्दर भाई चारे का बिना भेदभाव के इंसानियत का, अपनी शहनाई के माध्यम से जो आदर्श पेश किया, हम इस भावना का आदर करें तो उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आज हम आपसे प्रार्थना करेंगे पूरे सदन की तरफ से हमारी संवेदना और हमारी भावना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। हम उनके नाम से कुछ करना भी चाहते हैं। भारत रत्न स्व0 श्री बिसमिल्लाह खां के नाम से प्रदेश में एक संगीत रत्न पुरस्कार की शुरूआत की जाएगी जिसके लिए पांच लाख की धनराशि पुरस्कार विजेता को दी जाएगी।

"भारत रत्न" स्व0 बिस्मिल्लाह खां के नाम से लखनऊ में एक संगीत अकादमी की स्थापना की जायेगी और इसके लिए एक करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकार की जाती है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं पूरे सदन की ओर से उनके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और मैं पूरे सदन से प्रार्थना करूंगा कि उनकी भावनाओं को लेकर यदि हम चलें, तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

•नेता विरोधी दल (श्री लालजी टण्डन)-

मान्यवर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के चले जाने से इस देश की जो संस्कृति है, उसका एक बहुत बड़ा अलम्बरदार चला गया। उनके चले जाने से एक परम्परा का अन्त हो गया। उनके पूर्वज काशी विश्वनाथ मंदिर में शहनाई-वादन करते थे। कहावत तो यह है कि बिस्मिल्लाह खां जब सुबह शहनाई बजाते थे तब विश्वनाथ जी उठते थे और रात्रि में जब शहनाई बजाते थे, तब उनको नींद आती थी, यानी इतना लगाव हो और वह भारतीय संस्कृति के अम्बेसडर थे। जहां पर जाते थे और यह जो मुकाम उन्हें हासिल था, सारी दुनिया के लोग दंग रह जाते थे। वह जहां गए, छाप छोड़कर आए। उनकी सेवाओं को देखते हुए जो देश का सबसे बड़ा सम्मान है, भारत-रत्न उन्हें दिया गया। उनके चले जाने से एक अपूरणीय क्षति हुई है। अब दूसरे बिस्मिल्लाह खां तैयार होंगे, कहा नहीं जा सकता है। उनकी आखिरी इच्छा थी कि इण्डिया गेट के ऊपर जाकर वह शहनाई-वादन करें, यह सारे देश की सम्प्रभुता में विचार करने की सोच थी। यह उसका प्रतीक था और यह उनकी अन्तिम इच्छा थी कि वह वहां शहनाई-वादन करें। एक ऐसे कला-प्रेमी, ऐसे हुनरमंद व्यक्तित्व के चले जाने से इस देश की एक धरोहर का अन्त हुआ है और मैं उनके प्रति श्रद्धा के साथ संवेदना व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मेरे और मेरे दल की ओर से जो श्रद्धांजलि है, वह उनके परिवार तक प्रेषित करने की कृपा करें।

• वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री स्वामी प्रसाद मौर्य-

माननीय अध्यक्ष जी, भारत-रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां जी के निधन पर मा0 नेता सदन एवं मा0 नेता प्रतिपक्ष ने जो अपनी संवेदना व्यक्त की है, उससे अपने को मैं सम्बद्ध करता हूं और साथ ही साथ मान्यवर, इसी पिछली रात को लगभग 2.00 बजे श्री बिस्मिल्लाह खां जी जो इस देश के ही नहीं बल्कि विश्व के एक महानतम शहनाई-वादक थे या यूं कह लिया जाए कि वह एकलौते विश्व के सबसे बड़े शहनाई-वादक थे, हमारे बीच में नहीं रहे। श्रीमन्, खां जी की प्रतिभा, शहनाई-वादन एवं शहनाई-वादन के माध्यम से "हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सब हैं भाई-भाई," के सन्देश को जो उन्होंनें पूरे परिवेश मे फैलाने का काम किया, उससे स्पष्ट होता है कि वह इंसानियत के एक बहुत बड़े संभाग थे, महानायक थे और यूं कह लिया जाए कि वह अपने में अद्वितीय थे। उनका कोई सानी नहीं था और हमारे देश की जितने भी महत्वपूर्ण उपाधियां हैं वह उन्हें मिल चुकी हैं-पद्म श्री, पद्म भूषण, पदम विभूषण एवं भारत रत्न। इससे स्पष्ट होता है कि वह महान व्यक्तित्व के धनी थे। बिहार से आकर बनारस में उन्होंने शहनाई-वादन की जो शुरूआत की उस दौर का आज उनके निधन से अन्त हो गया है। मान्यवर, वह इस देश के महान शहनाई वादक ही नहीं थे बल्कि देश के प्रति बहुत ही सजग प्रहरी के रूप में यहां की एकता के पक्षधर थे। जब किसी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर चोट करने की कोशिश की तो वह जाति धर्म के ऊपर उठकर देश के सम्मान में अपनी निर्विवाद टिप्पणी करने से भी नहीं चूके। यही नहीं अभी कुछ दिन पहले बनारस में हुई आतंकी घटना के प्रति उस्ताद बिस्मिल्लाह खां जी ने जो टिप्पणी की उससे साफ जाहिर होता है कि वह कभी भी देश की अस्मिता से समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। देश की अस्मिता पर चोट करने वाले लोगों को उन्होंने जिस तरीके से कोसने का काम किया उससे जाहिर होता है कि वह देश की एकता के बहुत ही पक्षधर थे। हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई भाईचारे के वह प्रबल समर्थक थे। गंगा-जमुनी तहजीब के वह सम्वाहक थे और अपने शहनाई वादन से उन्होंने केवल देश में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों की राजधानियों में शहनाई वादन किया है जैसे कि अफगानिस्तान, यूरोप, इराक, ईरान, अमेरिका, कनाडा, जापान के साथ-साथ विश्व के और भी तमाम देशों में उन्होंने अपने शहनाई वादन की जो छाप छोड़ी है वह अपने आप में बेमिसाल है। ऐसे महान व्यक्तित्व के निधन से जो क्षति हुई है उसकी कभी भी भरपाई नहीं हो पाएगी। दूसरे उस्ताद बिस्मिल्लाह खां नहीं पैदा हो पायेंगे। हमें ऐसा लगता है कि हमने एक महान व्यक्तित्व खोया है जिसके निधन से हम सभी देशवासी शोक-संतप्त हैं। उनके निधन पर मैं अपनी ओर से अपने दल की ओर से उनके प्रति शोक-संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी इस शोक-संवेदना को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

महिला कल्याण, संस्कृति, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) (श्री राजेन्द्र सिंह राणा)-

मा0 अध्यक्ष जी, 90 वर्ष आयु के भारत के उस्ताद बिस्मिल्लाह खां का निधन होना इस प्रदेश के लिए, इस राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्हें न केवल हिन्दुस्तान में वरन् पूरी दुनिया में एक कला के मर्मज्ञ के रूप में जाना जाता था और उन्हें लोग कला की ख्याति के रूप में सुनते थे। हम लोगों ने किताबों में पढ़ा है तानसेन का गायन। वह ऐसे-ऐसे रागों को जन्म देते थे जिससे द्वीप

प्रज्ज्वलित हो जाते थे। उनका वर्णन हम लोग किताबों में पढ़ते थे। लेकिन वर्तमान युग में ऐसे कलाकार का होना, ऐसी कलाओं का प्रस्तुतीकरण हम लोगों के द्वारा देखना यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। 90 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। कल ही हमने अखबारों में पढ़ा था कि उन्होंने कुछ भोजन ग्रहण किया है तो यह उम्मीद बंधी थी कि वह स्वास्थ्य लाभ करेंगे। लेकिन दुर्भाग्य था कि उनका निधन हो गया। 15 अगस्त, 1947 में जब देश ने आजादी का जश्न मनाया होगा ऐसे में उनका शहनाई का वादन पूरे राष्ट्र ने सुना होगा और वह अविस्मरणीय क्षण रहा होगा। उसके बाद उन्होंने अपनी कला की धूम मचायी पूरी दुनिया में जो इस बात का द्योतक है कि भारत कला के क्षेत्र में आदिकाल से आज तक समृद्ध है। मैं ऐसे महान कलाकार के लिए अपने साथियों की ओर से शोक संवेदना प्रकट करता हूं और माननीय नेता सदन तथा माननीय नेता विरोधी दल से अपने को सम्बद्ध करते हुए आपसे अनुरोध करूंगा कि उनके परिवार तक हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री प्रमोद कुमार-

माननीय अध्यक्ष जी, कल सुबह लोगों ने राहत की सांस ली थी जब अखबार पढ़ा कि उस्ताद की तबियत सुधर रही है और आज सुबह ही यह मनहूस खबर आ गयी, जिसका लोगों को डर समाया था कि उस्ताद बिस्मल्लाह खां नहीं रहे। उनके निधन से एक युग का अन्त हो गया और ऐसे युग का अन्त हुआ जिसकी भरपाई असम्भव नहीं तो बहुत मुश्किल है। उनके निधन से संगीत की दुनिया का बेताज बादशाह चला गया। ऐसा शहनाई वादक चला गया जिसने जीवन भर अपने स्वरों और रागों को लुटाया था। यही नहीं जब कभी जब कभी उनकी शहनाई बजती थी उसमें धर्मनिरपेक्षता, भाईचारे और प्यार का भाव होता था जिसे सिर्फ उस्ताद ही दे सकते थे और वह सिर्फ बिस्मल्लाह खां ही थे। मान्यवर, उनके जीवन में कुछ दिन पहले जर्जर अवस्था में भी, जब बनारस में आतंकवादी हमला हुआ और आसपास की बस्तियों को जलाने का काम किया जा रहा था तो उस्ताद बोले थे। उन्होंने कहा था "यह शैतानियत की इंतिहा है और यह इंसान नहीं कर सकता है, शैतान ही कर सकता है उसको सूली पर चढ़ा देना चाहिए।" यह उनकी वाणी थी जिससे बनारस एक सूत्र में बंधा था। उनके इस संदेश से जीवन जीत गया और आतंकवाद हार गया था। उनके निधन से इस प्रदेश और देश ने एक संगीतकार, धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति खो दिया जिसकी जरूरत थी। मान्यवर, एक शेर उनके सम्मान में पढ़ना चाहूंगा कि--

"हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है,
तब होता है चमन में दीदावर पैदा।"

जहां यह उस्ताद पर कही गयी लाइनें हैं, शब्द इधर या उधर हो सकते हैं पर भावना यही है मान्यवर, कि हजारों सालों में कोई उस्ताद बिस्मिल्लाह खां पैदा होता है। मैं यही दुआ करूंगा कि हमें फिर कोई न कोई उनके रूप में मिले जो सिर्फ संगीत का ही साधक न हो, बाबा विश्वनाथ का ही साधक न हो, कौमी एकता का ही साधक न हो बल्कि उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की तरह धर्म निरपेक्षता की जीती-जागती मिसाल भी हो।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पर्यटन मंत्री (श्री कौकब हमीद)-

मान्यवर, भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब का दुनिया से उठ जाना एक अध्याय का खत्म होना है। उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब सिर्फ एक शहनाई वादक ही नहीं थे मान्यवर, वह इस देश में एक पैगाम लेकर आये थे, जो कौमी एकता का पैगाम था, जो एकता का पैगाम था। संगीत के साथ उन्होंने शहनाई को शादियों के मण्डप से उठाकर संगीत के समागम के अन्दर तक ले गये और वहां उन्होंने वह ख्याति प्राप्ति की जो आसानी से आम आदमी नहीं प्राप्त कर सकता है। वह संघर्ष करते हुए, गुरबत से उठकर उस ख्याति तक पहुंचें जहां हर अवार्ड उन्हें मिला, सारे के सारे अवार्ड मिलना उनकी बहुत बड़ी कामयाबी थी। सबसे बड़ी कामयाबी उनकी शहनाई के सुर थे, उनका यह संदेश की यह देश एक है और सब धर्मों का है और मैं इसका प्रचार शहनाई से करना चाहता हूं, उनकी जो ख्याति थी वह यह थी। मान्यवर, मैं अपने दल की तरफ से चाहूंगा कि उनके परिवार को शोक-संवेदनायें भेज दी जायें।

श्री राम कृपाल-

माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां जो शहनाई वादक थे आज हमारे बीच नहीं रहे। आज हमारा सदन काफी चिन्तित है, शोक संतप्त है, जो हमारे नेता सदन ने नेता विरोधी दल ने, नेता बहुजन समाज पार्टी ने, माननीय प्रमोद कुमार जी ने और हमारे तमाम माननीय नेताओं ने जो अपनी भावनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को जोड़ते हुए चाहूंगा कि उनके शोक-संतप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचा दी जायें।

श्री श्यामदेव राय चौधरी-

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, शहनाई के जादूगर बनारस की मिट्टी से जुड़े हुए उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब नहीं रहे। वह बहुत छोटी आयु में बिहार से बनारस आये थे और वहीं पर संकट मोचन के मन्दिर में, विश्वनाथ जी के मन्दिर में बाला जी मन्दिर और गंगा तट पर उन्होंने शहनाई की साधना की, सुरों की साधना की और उस् साधना के बल पर उन्होंने सिद्धी प्राप्त की। वे फर्स से अर्स तक पहुंचे और अपनी साधना के बल पर उन्होंने जो गुण हासिल किया उससे यह कहा जा सकता है कि शहनाई और उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब दोनों एक ही चीज थे, एक दूसरे के पूरक थे। शहनाई जैसे वाद्य यंत्र को उन्होंने दुनिया के क्षितिज पर पहुंचाया और एक भारतीय वाद्य यंत्र को उन्होंने विश्व में स्थान दिलाया, लेकिन उनके अन्दर एक बनारसी अल्हण और मस्ती का समावेश था, बनारस की मिट्टी से उनका बड़ा जुड़ाव था। वह जमीन से आसमान तक पहंचने के बाद भी कभी बनारस को नहीं भूले। मान्यवर, जब भी वह बीमार पड़े बहुत से लोगों ने कहा कि आपको अमुक स्थान पर चिकित्सा की सुविधा प्राप्त करायी जाये लेकिन उन्होंने कहा कि पता नहीं कब मौत आ जाये और उस हालत में बनारस की मिट्टी को नहीं छोड़ सकता। मेरी अन्तिम इच्छा है कि मेरी सांस बनारस में ही टूटे। वह सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे। विभिन्न अवसरों पर उन्होंने अपनी बेबाक टिप्पणी भी की, चाहे वह आतंकवादी गतिविधियां हो या अन्य कोई अवसर हो। उन्होंने कभी सर्वधर्म समभाव का जो उनका नजरिया था, उससे वह पीछे नहीं हटे। उनको सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न की

उपाधि भी प्राप्त हुई। निश्चित रूप से उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब के निधन से भारत की अपूरनीय क्षति हुई है। बनारस में, मुझे यह कहने में गौरव का अनुभव होता है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र हड़हा क्षेत्र के वह निवासी थे और इतनी ऊंचाई, उपलब्धियों तक पहुंचने के बाद भी जो उनका मकान था, जो निवास स्थान था वह बहुत ही साधारण था। उसके तीसरे तल पर एक छोटे से कमरे में वह रहते थे। एक तख्त था जिस पर वह सोते थे और उसके बगल में दो शहनाई रहती थी। बीमारी की हालत में जब भी अवसर मिला वह शहनाई की धुनों को छेड़ते थे। उनके चले जाने से निश्चित रूप से विश्व ने भारतीय संगीत के महान व्यक्तित्व को खो दिया है। दुनिया को उससे जो क्षति हुई है, बनारस को अपूरनीय क्षति हुई है।

आज मुझे नहीं पता था, कल मैं जब बनारस से चला था तो जो मेडिकल बुलेटिन्स जारी हुए थे उसमें यह था कि वह रिकवर कर रहे हैं और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं और जल्दी ही वह स्वास्थ्य लाभ करके घर लौट जायेंगे। शायद मुझे अगर ऐसा पता होता तो मैं आज यहां न आता। मुझे यहां आकर पता चला कि उनका स्वर्गवास हो गया है। मैं उनके जनाजे में नहीं पहुंच पाऊंगा इसका मुझे खेद है।

मैं उस अजीम शख्सियत को अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि मेरी भावनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक आप पहुंचाने की कृपा करें।

श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ''हरीश जी''-

अध्यक्ष महोदय, परसों मैं उनसे हेरिटेज हास्पिटल वाराणसी में मिलने के लिए चला गया था। मैंने नमस्ते किया उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी। मेरे मन को लगा कि यह स्वस्थ हो रहे हैं। मेरे नमस्कार का उन्होंने जवाब भी दिया और अपने परिजनों से कहा कि हरीश जी को बिठा लो। मैं बैठ गया। थोड़ी देर बैठ कर उठ कर जब चलने लगा तो मेरे पुनः प्रणाम का उत्तर दिया और साथ-साथ कहा कि आपने देख लिया कि मैं तो ठीक हो रहा हूं। मुझे अब बाहर जाने की बात नहीं कही जाए मैं बनारस नहीं छोडूंगा। बनारस की मिट्टी से उनका लगाव था।

मैं समझ गया कि वह ठीक हो रहे हैं। मैं लखनऊ चला आया। मुझे भी आज लग रहा है कि यदि मैं वाराणसी होता तो ठीक रहता। लेकिन आपने मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए धन्यवाद। मान्यवर, मैं उनके सम्पर्क में रहा हूं, मेरा मन कहता है कि इस देश में घरौंदे बने हुए हैं। जातियों के, पन्थों के, मजहबों के घरौंदे बने हुए हैं जो जहां जिस घरौंदे में जन्म ले जायेगा कई बार उसी का कहलाने लगता है।

लेकिन बिस्मिल्लाह साहब को मैंने अनुभव किया कि किसी भी घरौंदे में जन्में लेकिन सबके होकर रहे और सबके लिए जिये। मैं समझता हूं कि एक ऐसा उदाहरण पेश किया है जिससे सबक मिलता है सीख मिलती है। इसलिए मैंने उनके प्रति अपना भाव व्यक्त किया है।

भारतीय कला के सम्बन्ध में मेरी कई बार मिल बैठकर उनसे बात हुई है। वह केवल शहनाई वाद के आचार्य या उस्ताद नहीं बने सारे विश्व में उन्होंने अपना स्थान बनाकर भारत के इस संगीत, इस वाद्य को सारी दुनिया में ऊंचाई तक ले गये। लेकिन भारत का नृत्य है और कलाएं हैं, जितनी विशेषताएं हैं सबके बारे में चर्चा करके कहते थे कि भारत की सारी विशेषताएं जिन्दा रहें,

बढ़ती रहें, विकसित होती रहें इसके लिए आप लोग भी सरकार में शासन में कोशिश करें, ऐसा उनके मन से भाव थे। उन्होंने घरौंदे में जन्म लिया लेकिन वह सबके होकर रहे और सबके लिए जिये और एक ऐसा उदाहरण पेश किया जिससे सबक मिलता है। शहनाई के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किये और भारत के सम्बन्ध में सारे विश्व में ऊंचा स्थान बनाकर भारतीय वाद्य को संगीत की धुन में ऊंचाई तक ले गये। नृत्य कलाएं हैं जितनी विशेषताएं हैं सबके बारे में चर्चा करके कहते थे कि संगीत वाद नृत्य में भारत की विशेषताएं विकसित हो जाये आप लोग शासन में कोशिश करें।

एक दिन जब यह सुना उनकी शहनाई तब मुझे लगा कि गंगा तट से, संकटमोचन मन्दिर से, विश्वनाथ जी के स्थान से जो उन्होंने साधना की है, गंगा की लहरी और शंकर जी का जगना और शंकर जी के सो जाने का, वैसे ही डमरू का निनाद जो निकालते थे उस शहनाई में से तो मुझे भी लगता था कि ऐसा आदमी जो कम पढ़ा लिखा लेकिन अपने परिश्रम, तपस्या त्याग और साधना से अपने अनुराग और लगन से इतनी ऊंचाई तक पहुँचा है। जिस कला को इतनी ऊंचाई तक पहुंचाया है उस कला ने उनको भारत में, सारे विश्व में एक बड़े ऊंचे स्थान तक पहुंचाया है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके निधन पर मैं अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं। आपसे अनुरोध करता हूं कि भारत रत्न बिस्मिल्लाह खां के परिवारजनों को हमारी इस भावना को पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष-

"भारत रत्न" उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, शहनाई वादक का 21 अगस्त, 2006 को निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष के थे।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खां का जन्म 21 मार्च, 1916 को बिहार में हुआ था। शहनाई सीखने के लिए वे छोटी सी उम्र में बनारस आ गये थे। उन्हें संगीत की शिक्षा उनके चाचा उस्ताद अली बक्श ने दी थी जो बनारस के पवित्र विश्वनाथ मन्दिर में अधिकृत शहनाई वादक थे।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने भारत के पहले गणतन्त्र दिवस की पूर्व संध्या पर नई दिल्ली में लाल किले से अत्यधिक मर्मस्पर्शी शहनाई वादन प्रस्तुत किया था। इन्हें वर्ष 1994 में "पद्म विभूषण" तथा 2001 में "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी और विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन ने इन्हें डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की थी। कहते हैं कि बाबा विश्वनाथ इनकी शहनाई की धुन से ही जगते थे और पूरा बनारस जगता था।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने अफगानिस्तान, यूरोप, ईरान, इराक, कनाडा, अमेरिका, जापान सहित विश्व की लगभग सभी राजधानियों में शहनाई की मधुर धुनों से अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के निधन से देश ने एक महान शहनाई वादक, एक महान कलाकार तथा एक महान ऐसा व्यक्ति जिसने भारत को जोड़ने का काम किया, खो दिया है। माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं की भावनाओं से उनके परिवार को अवगत कराऊंगा। आप सबसे आग्रह है कि दो मिनट के लिए मौन धारण करें।

(दिवंगत आत्मा की शांति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन खड़े हुए।)

कृपया बैठ जायें।

अब हम उठते हैं। कल 11.00 बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 12 बजकर 10 मिनट पर ..... अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ :

दिनांक 21 अगस्त, 2006

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,
प्रमुख सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी0एस0यू0पी0-एल0 206 विधान सभा (344)-13-10-2006-813-कम्प्यूटर।

उत्तर प्रदेश विधान सभा